आरती पंचपरमेष्ठी

पंच परमेष्ठी, देवगढ़

इह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे ॥ टेक॥
पहली आरती श्री जिन राजा, भवदधि पार उतार जिहाजा ॥ इह॥
दूसरी आरती सिद्धन केरी, सुमिरन करत मिटे भव फेरी ॥ इह॥
तीसरी आरती सूर मुनिन्दा, जनम मरण दुःख दूर करिन्दा ॥ इह॥
चौथी आरती श्री उवज्झाया, दर्शन देखत पाप पलाया ॥ इह॥
पाँचवी आरती साधु तिहारी, कुमति विनाशन शिव अधिकारी ॥ इह॥
छठी ग्यारह प्रतिमा धारी, श्रावक बन्दौ आनन्दकारी ॥ इह॥
सातवीं आरती श्री जिनवाणी, 'द्यानत' स्वर्ग मुक्ति सुखदानी ॥ इह॥
सांझ सवेरे आरती कीजे, अपनों जनम सफल कर लीजे ॥ इह॥
जो कोई आरती करे करावे, सो नर नार अमर पद पावे॥ ॥ इह॥